कक्षा 12 · इतिहास

ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ (हड़प्पा सभ्यता)

अध्याय 1

MARUSHALA

भरत चौधरी और वनिता कुमारी ने बनाया · marushala.com

एक ऐसी सभ्यता जिसकी लिपि आज तक कोई नहीं पढ़ सका — फिर भी हम उसके भोजन, व्यापार और शहरों के बारे में कैसे जानते हैं?

यही इस अध्याय का असली विषय है — साक्ष्य (Evidence) से इतिहास बनाने की कला। संकेत: उत्तर 'ईंटों, मनकों और अस्थियों' में छिपा है।

पथ-प्रदर्शक: इस अध्याय में क्या-क्या?

- **क्या जानते हैं** — निर्वाह, शहर, समाज, शिल्प, व्यापार, सत्ता, अंत
- **कैसे जानते हैं** — पुरातात्त्विक साक्ष्य, वर्गीकरण, संदर्भ, तुलना
- **व्याख्या कैसे बदलती है** — आक्रमण-मिथक से DNA-शोध तक
- खोज-कथा: कनिंघम (1875) से राखीगढ़ी (2013) तक
- केंद्रीय पुरावस्तु: **सेलखड़ी (Steatite) की मुहर** — जानवर + अपठित लिपि

पूरा अध्याय एक ही सूत्र पर चलता है: साक्ष्य → व्याख्या → पुनर्व्याख्या

कालक्रम — कंठस्थ करने योग्य

शर्तें, स्थान और समय

‘हड़प्पा’ नाम उस स्थल से जहाँ सभ्यता की पहली बार पहचान हुई

भूगोल

विस्तार: कहाँ-कहाँ फैली थी यह सभ्यता?

- अफ़ग़ानिस्तान, बलूचिस्तान, सिंध, पाकिस्तानी पंजाब
- भारत: जम्मू, पंजाब, हरियाणा, **राजस्थान**, पश्चिमी उ.प्र., गुजरात, महाराष्ट्र
- ज्ञात पुरास्थल: **2000 से अधिक**; लगभग **2/3 सरस्वती बेसिन** में
- पाँच प्रमुख शहर: **राखीगढ़ी • मोहनजोदड़ो • हड़प्पा • धौलावीरा • गनवेरीवाला**
- अन्य श्रेणियाँ: क्षेत्रीय केंद्र, कृषि गाँव, बंदरगाह, विनिर्माण केंद्र

स्मरण-सूत्र: “रा-मो-ह-धौ-ग” — मानचित्र 1 पर पाँचों को अंकित कराएँ

1

आरंभ

पूर्ववर्ती संस्कृतियाँ ; क्रमिक विकास का सिद्धांत

हड़प्पा से पहले भी जीवन था

- पूर्ववर्ती संस्कृतियाँ — प्रत्येक की **विशिष्ट मृद्भाण्ड शैली**
- साक्ष्य: कृषि, पशुपालन, कुछ शिल्पकारी
- बस्तियाँ छोटी; **बड़ी संरचनाएँ लगभग नहीं**
- नवीन साक्ष्य: **7000 ई.पू.** के आरंभिक कृषक समुदाय
- निष्कर्ष: शहरी चरण = **क्रमिक परिवर्तन + आंतरिक विकास**

सभ्यता बाहर से आयातित नहीं — यह देशज (Indigenous) विकास था

2

निर्वाह के तरीके

आहार ; कृषि प्रौद्योगिकी ; सिंचाई

खाते क्या थे? — दो प्रकार के विशेषज्ञ बताते हैं

पुरा-वनस्पतिज्ञ (जले दाने-बीज)

- गेहूँ, जौ, दाल, सफ़ेद चना, तिल
- **बाजरा** — गुजरात के स्थलों से
- चावल — अपेक्षाकृत **कम**

जीव-पुरातत्त्वविद (हड्डियाँ)

- पालतू: मवेशी, भेड़, बकरी, भैंस, सूअर
- जंगली: वराह, हिरण, घड़ियाल
- मछली व पक्षी भी भोजन में

अनुत्तरित: शिकार स्वयं करते थे या आखेटक-समुदायों से माँस लेते थे?

कृषि प्रौद्योगिकी: खेत कौन जोतता था?

- मुहरों-मृण्मूर्तियों पर **वृषभ** → बैलों से जुताई का अनुमान
- मिट्टी के **हल-प्रतिरूप**: चोलिस्तान तथा बनावली (हरियाणा)
- **कालीबंगन (राजस्थान): जुते खेत का साक्ष्य** — आरंभिक हड़प्पा स्तर
  - हल-रेखाओं के दो समूह **समकोण पर** → एक साथ **दो फ़सलें**
- कटाई: लकड़ी के हत्थों में पत्थर के फलक या धातु? — अनिश्चित
- सिंचाई: अर्ध-शुष्क क्षेत्र → नहरें (**शोर्तुगई**, अफ़गानिस्तान), कुएँ
- **धौलावीरा** के जलाशय → कृषि हेतु जल-संचयन

स्रोत 1 (मैके): अवतल चक्कियाँ — आधुनिक तुलना से पुरावस्तु-पहचान की विधि

3

योजनाबद्ध शहर: मोहनजोदड़ो

दुर्ग व निचला शहर ; नालियाँ ; गृह-स्थापत्य ; स्नानागार

एक शहर, दो संसार

दुर्ग (Citadel)

- छोटा, **ऊँचाई पर**, पश्चिम में
- कच्ची ईंटों के **चबूतरों** पर संरचनाएँ
- **दीवार से घिरा** — निचले शहर से अलग
- विशिष्ट सार्वजनिक भवन (आगे देखेंगे)

निचला शहर (Lower Town)

- कहीं अधिक **बड़ा**, नीचे, पूर्व में
- यह भी **दीवार से घिरा** था
- कई भवन ऊँचे चबूतरों (नींव) पर
- आवासीय भवन — गृह-स्थापत्य के उदाहरण

धौलावीरा व लोथल: पूरी बस्ती किलेबंद; लोथल का दुर्ग दीवार-रहित पर ऊँचा

नियोजन का पैमाना

40 लाख श्रम-दिवस

केवल **आधार (चबूतरे)** बनाने हेतु — यदि एक श्रमिक प्रतिदिन 1 घनीय मीटर मिट्टी ढोता। इतना श्रम कौन जुटाता-चलाता था? → यह प्रश्न 'सत्ता' खंड में लौटेगा।

पहले चबूतरे, फिर उन पर नियोजित भवन — "पहले नियोजन, फिर कार्यान्वयन"

मानकीकरण का प्रमाण

एक ईंट में छिपा गणित

4 : 2 : 1 लंबाई = चौड़ाई की **चार गुनी** = ऊँचाई की **दोगुनी**। धूप में सुखी हों या भट्ठी में पकी — यही अनुपात **जम्मू से गुजरात तक** हर हड़प्पा बस्ती में।

एक जैसी ईंटें, बिना एक केंद्र के — मानकीकरण किसने लागू किया?

जल निकास प्रणाली: शहर की सबसे अनूठी पहचान

- सड़कें-गलियाँ लगभग **'ग्रिड' पद्धति** में — समकोण पर काटती हुईं
- क्रम महत्त्वपूर्ण: **पहले नालियों सहित गलियाँ → फिर घर**
  - घर के गंदे पानी हेतु कम-से-कम एक दीवार गली से सटी होनी आवश्यक
- मुख्य नाले: गारे में जमी ईंटें; **हटाई जा सकने वाली ईंटों से ढँके** (सफ़ाई हेतु)
- घर की नाली → **हौदी/मलकुंड** (ठोस जमता) → गली की नाली
- छोटी बस्तियों में भी: **लोथल** — घर कच्ची ईंटों के, **नालियाँ पकी ईंटों** की

मलबे के ढेर नालों के पास ही मिले — सफ़ाई के बाद कचरा हमेशा हटा नहीं!

स्रोत 2 — नालियों पर मैके

निश्चित रूप से यह अब तक खोजी गई सर्वथा संपूर्ण प्राचीन प्रणाली है।

अर्नेस्ट मैके, अर्ली इंडस सिविलाईज़ेशन, 1948

परीक्षा-टिप: स्रोत-आधारित प्रश्नों में लेखक + पुस्तक + वर्ष तीनों लिखें

गृह स्थापत्य: घर बोलते हैं

- **आँगन-केंद्रित** घर — चारों ओर कमरे; आँगन = रसोई + कताई का केंद्र
- **एकांतता (Privacy)** का मूल्य:
  - भूमि-तल की दीवारों में **खिड़कियाँ नहीं**
  - मुख्य द्वार से आँगन का **सीधा अवलोकन नहीं**
- हर घर में **ईंट-फ़र्श वाला स्नानघर** — नाली सड़क की नाली से जुड़ी
- सीढ़ियों के अवशेष — दूसरा तल या छत
- कुएँ: प्रायः ऐसे कक्ष में जहाँ **बाहर से आया जा सके** (राहगीरों हेतु?)

मोहनजोदड़ो में कुओं की अनुमानित संख्या: लगभग 700

दुर्ग की दो विशिष्ट संरचनाएँ

- **मालगोदाम (Warehouse):** विशाल; ईंटों के निचले हिस्से शेष, लकड़ी के ऊपरी नष्ट
- **विशाल स्नानागार (Great Bath):**
  - आयताकार जलाशय + चारों ओर गलियारा; उत्तर-दक्षिण **दो सीढ़ियाँ**
  - ईंटें जमाकर + **जिप्सम के गारे** से **जलबद्ध (Watertight)**
  - तीन ओर कक्ष — एक में **बड़ा कुआँ**; निकासी बड़े नाले में
  - उत्तर में 8 स्नानघर — गलियारे के दोनों ओर **चार-चार**
- व्याख्या: अनोखापन + विशिष्ट संरचनाओं का सान्निध्य → **आनुष्ठानिक स्नान**

तर्क की संरचना देखिए: साक्ष्य पहले, व्याख्या बाद — यही पुरातत्त्व की भाषा है

हड़प्पा की दुर्दशा

प्राचीन स्थल से ले जाई गई ईंटें लाहौर-मुल्तान रेल-पटरी के “लगभग 100 मील” के लिए पर्याप्त थीं।

अलेक्ज़ैंडर कनिंघम का आकलन, 1875 — ईंट-चोरों द्वारा हड़प्पा की बर्बादी

इसीलिए मोहनजोदड़ो (बेहतर संरक्षित) विस्तृत अध्ययन का केंद्र बना

4

सामाजिक भिन्नताएँ

शवाधान ; उपयोगी बनाम विलास ; वितरण-अध्ययन

बिना लिखित रिकॉर्ड के कैसे पता चले कि समाज में कोई अमीर था, कोई ग़रीब?

पुरातत्त्वविदों की दो विधियाँ:

1. मृतकों का अध्ययन
2. वस्तुओं का वर्गीकरण।

विधि 1: शवाधान (Burials)

- तुलना-बिंदु: मिस्र के **पिरामिड** (कुछ हड़प्पा-समकालीन) — राजकीय, धन-भरे
- हड़प्पा: मृतक सामान्यतः **गर्तों (Pits)** में
  - कभी गर्त-बनावट भिन्न — सतहों पर **ईंटों की चिनाई** → सामाजिक भिन्नता? कहना कठिन
- कब्रों में मृद्भाण्ड-आभूषण → **मृत्युपरांत प्रयोग** की मान्यता का संकेत?
- आभूषण **पुरुष व महिला दोनों** के शवाधानों में
  - 1980 के दशक: पुरुष-खोपड़ी के पास शंख के 3 छल्ले, जैस्पर मनके, सैकड़ों सूक्ष्म मनके
- कहीं-कहीं मृतक **ताँबे के दर्पणों** के साथ

निष्कर्ष: हड़प्पावासी बहुमूल्य वस्तुएँ दफ़नाने में विश्वास नहीं रखते थे

विधि 2: उपयोगी बनाम विलास

- **उपयोगी:** सामान्य पदार्थ, सर्वत्र प्राप्त — चक्कियाँ, मृद्भाण्ड, सूइयाँ, झाँवा
- **कीमती:** दुर्लभ / महँगे / अस्थानीय पदार्थ / जटिल तकनीक
- **फ़यॉन्स** = घिसी रेत + रंग + चिपचिपा पदार्थ, पकाकर — बनाना कठिन → कीमती
- पेच: फ़यॉन्स की **तकली** — रोज़मर्रा की वस्तु या विलास? वर्गीकरण डगमगाता है
- **वितरण-अध्ययन:** महँगी वस्तुएँ **बड़ी बस्तियों में केंद्रित**
  - फ़यॉन्स-लघुपात्र: मोहनजोदड़ो-हड़प्पा से; **कालीबंगन से बिल्कुल नहीं**
- सोना दुर्लभ — सभी स्वर्णाभूषण **संचयों (Hoards)** से

संचय = सँभालकर रखी वस्तुएँ जिन्हें स्वामी कभी वापस नहीं ले पाया

5

शिल्प-उत्पादन

चन्हुदड़ो ; मनका-निर्माण ; उत्पादन-केंद्रों की पहचान

शिल्प को समर्पित एक पूरा नगर

केवल 7 हेक्टेयर

मोहनजोदड़ो (125 हेक्टेयर) के सामने बौना — पर **लगभग पूरी बस्ती शिल्प-उत्पादन में संलग्न**: मनके, शंख-कटाई, धातुकर्म, मुहर-निर्माण, बाट।

छोटा आकार ≠ छोटा महत्त्व — विशेषज्ञता (Specialisation) का प्रमाण

मनके: सामग्री से तकनीक तक

- सामग्री: **कार्नीलियन** (लाल), जैस्पर, स्फटिक, क्वार्ट्ज़, सेलखड़ी; ताँबा-काँसा-सोना; शंख, फ़यॉन्स, पकी मिट्टी
- आकार: चक्राकार, बेलनाकार, गोलाकार, ढोलाकार, खंडित; कुछ उत्कीर्णित/चित्रित
- **सेलखड़ी** (मुलायम): चूर्ण-लेप **साँचे में ढालकर** विविध आकार
  - सूक्ष्म मनके कैसे बनते थे? — **आज भी पहेली**
- **कार्नीलियन का लाल रंग:** पीले कच्चे माल को **आग में पकाकर**
- प्रक्रिया: पिंड तोड़ना → शल्क → घिसाई → पॉलिश → **छेद**
  - छेदने के विशेष उपकरण: **चन्हुदड़ो, लोथल, धौलावीरा**
- शंख-केंद्र (समुद्र-तट): **नागेश्वर व बालाकोट** — चूड़ियाँ, करछियाँ, पच्चीकारी

तैयार माल छोटे केंद्रों से बड़े शहरों (मोहनजोदड़ो, हड़प्पा) तक भेजा जाता

कोई कारख़ाना बोर्ड नहीं लगाता था — तो पुरातत्त्वविद उत्पादन-स्थल कैसे पहचानते हैं?

पाँच संकेतक खोजिए…

उत्पादन-केंद्र के पाँच संकेतक

- 1. **कच्चा माल:** प्रस्तर पिंड, पूरे शंख, ताँबा-अयस्क
- 2. **औज़ार**
- 3. **अपूर्ण वस्तुएँ**
- 4. **त्याग दिया गया माल**
- 5. **कूड़ा-करकट — सबसे अच्छे संकेतकों में से एक**
  - शंख/पत्थर की कटाई के टुकड़े वहीं फेंके जाते; बहुत छोटे टुकड़े वहीं छूटते
- निष्कर्ष: शिल्प-उत्पादन **बड़े शहरों में भी** होता था — केवल विशिष्ट केंद्रों में नहीं

‘कूड़े से इतिहास’ — पुरातत्त्व की सूक्ष्मतम दृष्टि का उदाहरण

6

माल प्राप्त करने की नीतियाँ

आंतरिक स्रोत ; ओमान-दिलमुन-मेसोपोटामिया

कच्चा माल पाने की दो नीतियाँ

नीति 1 — स्रोतों के पास बस्तियाँ

- **नागेश्वर-बालाकोट:** शंख
- **शोर्तुगई (अफ़गानिस्तान):** लाजवर्द मणि
- **लोथल:** कार्नीलियन (भड़ौच) + सेलखड़ी (द.राजस्थान/उ.गुजरात) + धातु (राजस्थान)

नीति 2 — अभियान भेजना

- **खेतड़ी अंचल (राजस्थान):** ताँबा
- **दक्षिण भारत:** सोना
- साक्ष्य: इन इलाकों में यदा-कदा हड़प्पाई पुरावस्तुएँ
- खेतड़ी = **गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति** — भिन्न मृद्भाण्ड, ताँबे की असाधारण संपदा

परिवहन: बैलगाड़ी (खिलौना-प्रतिरूप), नदी-मार्ग, तटीय मार्ग

तीसरी सहस्राब्दि ई.पू.

सुदूर संपर्क: मेसोपोटामियाई लेखों की गवाही

मेलुहा = “नाविकों का देश”; हाजा पक्षी = संभवतः मोर; संपर्क सामुद्रिक मार्ग से

ओमान-संपर्क का वैज्ञानिक प्रमाण

- **रासायनिक विश्लेषण:** ओमानी ताँबे व हड़प्पाई पुरावस्तुओं — दोनों में **निकल के अंश**
- → साझा उद्भव (Common origin) के संकेत
- बड़ा हड़प्पाई **मर्तबान** — ऊपर **काली मिट्टी की मोटी परत** (रिसाव-रोधी) — ओमानी स्थलों से प्राप्त
- संभावना: मर्तबान में रखा सामान ↔ ओमानी ताँबे का **विनिमय**
- मेसोपोटामिया के स्थलों से: हड़प्पाई **मुहरें, बाट, पासे, मनके**
- बेलनाकार मेसोपोटामियाई मुहर पर **कूबड़दार वृषभ** — सिंधु से लिया गया चित्र

पुरातत्त्व + रसायनशास्त्र + विदेशी अभिलेख = त्रिकोणीय पुष्टि (Triangulation)

7

मुहरें, लिपि तथा बाट

मुद्रांकन ; रहस्यमय लिपि ; बाट-प्रणाली

मुहर: प्राचीन ‘सीलबंद पैकिंग + हस्ताक्षर’

- थैले का मुख रस्सी से बँधा → गाँठ पर **गीली मिट्टी** → मुहर की छाप
- छाप = **मुद्रांकन (Sealing)**
- मुद्रांकन **अक्षुण्ण** = रास्ते में छेड़-छाड़ नहीं
- मुद्रांकन से **प्रेषक की पहचान** भी
- मुहर पर: एक पंक्ति का लेख (मालिक का नाम-पदवी?) + जानवर का चित्र
  - चित्र संभवतः **अनपढ़ लोगों** हेतु सांकेतिक अर्थ रखता था

प्रयोजन: लंबी दूरी के संपर्कों को सुविधाजनक बनाना

रहस्यमय लिपि

एक लिपि जो 100 वर्षों से चुनौती है

375–400 चिह्न

वर्णमाला में इतने चिह्न नहीं होते → लिपि **वर्णमालीय नहीं**। सबसे लंबे अभिलेख में मात्र **26 चिह्न**। दिशा: **दाईं से बाईं** (मुहरों पर दाईं ओर चौड़ा अंतराल इसका प्रमाण)।

लिखावट मिली: मुहरों, औज़ारों, मर्तबान-अँवठों, आभूषणों, अस्थि-छड़ों — और धौलावीरा के 'सूचना-पट्ट' पर

बाट: विनिमय का गणित

- सामग्री: **चर्ट (Chert)** पत्थर; आकृति: **घनाकार, निशान-रहित**
- निचले मानदंड **द्विआधारी (Binary):** 1, 2, 4, 8, 16, 32 ... 160, 200, 320, 640
- ऊपरी मानदंड: **दशमलव प्रणाली** के अनुसरण में
- छोटे बाट: **आभूषण व मनके** तौलने हेतु
- धातु के **तराजू-पलड़े** भी प्राप्त

मानकीकृत बाट = नियंत्रित-विश्वसनीय विनिमय = एकीकृत आर्थिक व्यवस्था का संकेत

8

प्राचीन सत्ता

एकरूपता के साक्ष्य ; पुरोहित-राजा ; तीन मत

चालीस लाख श्रम-दिवस, एक-सी ईंटें, नियोजित शहर — यह सब संगठित कौन करता था?

साक्ष्य ‘संगठन’ दिखाते हैं — पर ‘संगठनकर्ता’ नहीं।

सत्ता के साक्ष्य बनाम सत्ता की पहचान

- साक्ष्य-पक्ष: पुरावस्तुओं में **असाधारण एकरूपता** — मृद्भाण्ड, मुहरें, बाट, ईंटें
- ईंटें किसी एक केंद्र पर नहीं बनीं — फिर भी **जम्मू से गुजरात तक समान अनुपात**
- बस्तियाँ **विशेष स्थानों** पर आवश्यकतानुसार; **श्रम संगठित**
- पहचान-पक्ष (कठिनाई):
  - ‘प्रासाद’ कहा गया विशाल भवन — **भव्य वस्तुएँ नहीं मिलीं**
  - **‘पुरोहित-राजा’:** नाम मेसोपोटामिया के सादृश्य से — आधार संदिग्ध
  - अनुष्ठान-कर्ताओं के पास **राजनीतिक सत्ता** थी? — ज्ञात नहीं

नामकरण भी व्याख्या है — ‘पुरोहित-राजा’ नाम स्रोत नहीं, धारणा से आया

इतिहासकारों की बहस

शासन-स्वरूप: तीन मत

साथ ही: कुछ भवन-सुविधाएँ “लोगों के लिए, लोगों के द्वारा” — लोकतांत्रिक प्रणाली के संकेत भी

9

सभ्यता का अंत

लक्षण ; कारण-बहस ; आक्रमण-मिथक ; राखीगढ़ी-DNA

अंत के लक्षण: शहर से गाँव की ओर

- **≈1800 ई.पू.:** चोलिस्तान जैसे क्षेत्रों में स्थल **परित्यक्त**; गुजरात-हरियाणा-प.उ.प्र. की नयी बस्तियों में आबादी बढ़ी
- 1900 ई.पू. के बाद भौतिक संस्कृति में परिवर्तन:
  - विशिष्ट पुरावस्तुएँ लुप्त: **बाट, मुहरें, विशिष्ट मनके**
  - **लेखन, लंबी दूरी का व्यापार, शिल्प-विशेषज्ञता** समाप्त
  - निर्माण-तकनीक का ह्रास; सार्वजनिक संरचनाएँ बंद
- → **ग्रामीण जीवनशैली**: “उत्तर हड़प्पा” / “अनुवर्ती संस्कृतियाँ”

शहरों का अंत ≠ लोगों का अंत — जीवन चला, शैली बदली

पतन क्यों? — व्याख्याएँ और उनकी परीक्षा

- प्रचलित कारण: **जलवायु परिवर्तन • वनों की कटाई • अत्यधिक बाढ़ • नदियों का सूखना/मार्ग बदलना • भूमि का अत्यधिक उपयोग**
- परीक्षा: कुछ 'कारण' कुछ बस्तियों पर लागू — **पूरी सभ्यता के पतन की व्याख्या नहीं**
- सशक्त व्याख्या: एक सुदृढ़ **एकीकरण-तत्त्व — संभवतः हड़प्पाई राज्य — का अंत**
  - प्रमाण: मुहर-लिपि-मानक बाट का लोप; स्थानीय बाटों का प्रयोग; शहरों का पतन-परित्याग
- नए शहरों हेतु उपमहाद्वीप को **एक सहस्राब्दि से अधिक** प्रतीक्षा

विश्लेषणात्मक प्रश्नों का प्रिय क्षेत्र — 'कारण बनाम व्याख्या' का भेद स्पष्ट रखें

स्रोत 3: एक व्याख्या का बनना और बिखरना

1 **1925**
मोहनजोदड़ो: सोलह अस्थि-पंजर आभूषणों सहित मिले (डैडमैन लेन क्षेत्र)

2 **1931**
जॉन मार्शल — विवरण प्रकाशित (मोहनजोदड़ो एंड द इंडस सिविलाईज़ेशन)

3 **1947**
व्हीलर: ऋग्वेद का ‘पुर’ = किला; इंद्र =**पुरंदर** → जनसंहार; “**इंद्र अभियुक्त**”

4 **1964**
डेल्स: अस्थि-पंजर एक काल के नहीं; विनाश-स्तर नहीं; सैनिक-शव नहीं →**मिथक ध्वस्त**

5 **2019**
राखीगढ़ी-DNA (शिंदे एट.अल.): निरंतरता सिद्ध — आगे देखिए

सीख: तथ्यों का पुनरीक्षण पूर्ववर्ती व्याख्या को पूरी तरह उलट सकता है

राखीगढ़ी: DNA से लिखा नया अध्याय (2019)

- **राखीगढ़ी (हिसार, हरियाणा):** सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन शहर — **550 हेक्टेयर**
- कंकाल-अवशेषों से **DNA**: डेक्कन कॉलेज (पुणे) + CCMB (हैदराबाद) + हार्वर्ड मेडिकल कॉलेज
- निष्कर्ष:
  - हड़प्पावासी **इसी क्षेत्र के मूल निवासी**; अनुवांशिक जड़ें **10,000 ई.पू.** तक
  - उनका DNA **आज तक कायम** — दक्षिण एशियाई आबादी का अधिकांश उन्हीं के वंशज
  - **आर्यों के बड़े पैमाने पर आगमन का सिद्धांत पूर्णतः गलत सिद्ध**
  - 3-D चेहरा-पुनर्निर्माण: हरियाणा की वर्तमान आबादी से समानता — **5000 वर्षों की निरंतरता**
- कुछ विद्वानों का तर्क: **हड़प्पावासी ही वैदिक लोग** थे

व्यापार-संपर्कों के बावजूद बाहरी जीन-मिश्रण कम मात्रा में मिला

10

खोज का इतिहास

कनिंघम ; साहनी-बनर्जी ; मार्शल ; व्हीलर

कनिंघम का भ्रम: सही मुहर, गलत नक्शा

- **अलेक्ज़ैंडर कनिंघम** — ASI के पहले डायरेक्टर जनरल
- पद्धति: **लिखित स्रोत** (साहित्य-अभिलेख) प्राथमिक; **चीनी बौद्ध तीर्थयात्रियों** (चौथी-सातवीं श. ई.) के वृत्तांतों से स्थल-पहचान
- रुचि-सीमा: आरंभिक ऐतिहासिक काल (छठी श. ई.पू.–चौथी श. ई.) और बाद का पुरातत्त्व
- हड़प्पा यात्रा-वृत्तांतों में नहीं था; मिली मुहर को **परिचित काल-खंड** में दिनांकित करने का असफल प्रयास
- मान्यता: भारतीय इतिहास का आरंभ **गंगा घाटी के पहले शहरों** से

स्रोत-पद्धति ही दृष्टि तय करती है — यही कनिंघम की चूक का मूल

1924: विश्व को घोषणा

मार्शल ने भारत को जहाँ पाया था, उसे उससे तीन हज़ार वर्ष पीछे छोड़ा।

एस.एन. राव, द स्टोरी ऑफ़ इंडियन आर्कियोलॉजी — जॉन मार्शल की सिंधु-घोषणा (1924) पर

क्रम: साहनी (1921, हड़प्पा) → बनर्जी (1922, मोहनजोदड़ो) → मार्शल की घोषणा (1924)

मार्शल बनाम व्हीलर: पद्धति का विकास

जॉन मार्शल

- भारत के **पहले पेशेवर पुरातत्त्वविद**; यूनान-क्रीट का अनुभव
- दैनिक जीवन की पद्धतियों में रुचि
- **चूक:** स्तर-विन्यास की अनदेखी — समान **क्षैतिज इकाइयों** में खुदाई
- परिणाम: संदर्भ-जानकारी **हमेशा के लिए लुप्त**

आर.ई.एम. व्हीलर (1944)

- निदान: टीले के **स्तर-विन्यास का अनुसरण** आवश्यक
- सेना के पूर्व-ब्रिगेडियर — **सैनिक परिशुद्धता**
- नियम: सबसे निचला स्तर **प्राचीनतम**
- स्तरों का अध्ययन = **स्तर क्रम विज्ञान (Stratigraphy)**

शब्दावली: पुरास्थल • टीला • स्तर • बंजर स्तर — परिभाषाएँ नोट कराएँ

विभाजन के बाद: भारत की नयी खोजें

- 1947: प्रमुख ज्ञात पुरास्थल (हड़प्पा, मोहनजोदड़ो) **पाकिस्तान में**
- भारतीय पुरातत्त्वविदों का अभियान — कच्छ, पंजाब, हरियाणा में सर्वेक्षण
- खोजें-उत्खनन: **कालीबंगन, लोथल, राखीगढ़ी**, हाल में **धौलावीरा**
- 1980 के दशक से: **अंतर्राष्ट्रीय रुचि** — उपमहाद्वीपीय + विदेशी विशेषज्ञों का संयुक्त कार्य
- आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकें: सतह-अन्वेषण, हर सूक्ष्म टुकड़े का विश्लेषण

नए अन्वेषण आज भी जारी हैं — इतिहास 'बंद फ़ाइल' नहीं है

हड़प्पाई पुरातत्त्व: 140 वर्षों की यात्रा

1 **1875**
कनिंघम — हड़प्पाई मुहर पर रिपोर्ट

2 **1921**
दया राम साहनी — हड़प्पा में उत्खनन आरंभ

3 **1922**
राखाल दास बनर्जी — मोहनजोदड़ो में उत्खनन

4 **1946**
व्हीलर — हड़प्पा में उत्खनन

5 **1955**
एस.आर. राव — लोथल

6 **1960**
बी.बी. लाल व बी.के. थापर — कालीबंगन

7 **1974**
एम.आर. मुगल — बहावलपुर अन्वेषण

8 **1980**
जर्मन-इतालवी दल — मोहनजोदड़ो सतह-अन्वेषण

9 **1986**
अमरीकी दल — हड़प्पा

10 **1990**
आर.एस. बिष्ट — धौलावीरा

11 **1997**
अमरेंद्र नाथ — राखीगढ़ी

12 **2013**

11

अतीत को जोड़ने की समस्याएँ

परिरक्षण ; वर्गीकरण ; धर्म की व्याख्या

साक्ष्य की सीमाएँ और वर्गीकरण

- लिपि से मदद नहीं → केवल **भौतिक साक्ष्य**
- **परिरक्षण-पूर्वाग्रह:** जैविक पदार्थ (कपड़ा, चमड़ा, लकड़ी, सरकंडे) **सड़ जाते**; बचते — पत्थर, पकी मिट्टी, धातु
- केवल टूटी वस्तुएँ फेंकी जातीं; अच्छी **पुनः चक्रित** → अक्षत वस्तु मिलना संयोग
- वर्गीकरण के दो आधार: **पदार्थ** (सरल) व **उपयोगिता** (जटिल)
- उपयोगिता कैसे समझें: **आधुनिक समानता** • **प्राप्ति-संदर्भ** (घर? नाला? कब्र? भट्ठी?) • **अप्रत्यक्ष साक्ष्य** (कपास ↔ मूर्तियों का पहनावा)

पहली मुहर तभी समझ आई जब ‘संदर्भ की रूपरेखा’ मिली — संदर्भ ही अर्थ देता है

धर्म की व्याख्या: सबसे फिसलन भरी ज़मीन

- आरंभिक सूत्र: असामान्य-अपरिचित वस्तु = संभवतः धार्मिक
- **मातृदेवियाँ:** आभूषण-लदी नारी मृण्मूर्तियाँ, शीर्ष पर विस्तृत प्रसाधन
- **पुरोहित-राजा:** मानकीकृत मुद्रा वाली दुर्लभ पत्थर-मूर्तियाँ
- आनुष्ठानिक संरचनाएँ: विशाल स्नानागार; **कालीबंगन-लोथल की वेदियाँ**
- मुहरों पर: पेड़-पौधे → **प्रकृति-पूजा**; **एकश्रृंगी** — काल्पनिक संश्लिष्ट जानवर
- शंक्वाकार पत्थर → **लिंग** के रूप में वर्गीकृत
- विधि: **ज्ञात (वर्तमान) से अज्ञात (अतीत)** — चक्की के लिए ठीक, धार्मिक प्रतीक के लिए संदिग्ध

मैके: वही शंकु 'लिंग' भी हो सकते हैं और 'खेल की गोटियाँ' भी — दो व्याख्याएँ!

‘आद्य शिव’ मुहर: एक कक्षा-बहस

- मुहर: **पालथी मारे ‘योगी’ मुद्रा** की आकृति, कभी-कभी जानवरों से घिरी
- व्याख्या: हिंदू धर्म के देवता **शिव का आरंभिक रूप** — ‘आद्य शिव’ (Proto-Shiva)
- आपत्ति (साक्ष्य से):
  - **ऋग्वेद** (≈1500–1000 ई.पू.) में **रुद्र** — बाद में शिव-नाम
  - पर ऋग्वैदिक रुद्र **न पशुपति है, न योगी** → चित्रण मेल नहीं खाता
- वैकल्पिक सुझाव: आकृति **शमन (Shaman)** — जादुई/इलाज-शक्तियों का दावा करने वाले
- खुले प्रश्न: स्नानागार की भूमिका? साक्षरता कितनी व्यापक? **स्त्री-पुरुष संबंध** — लगभग अनछुआ क्षेत्र

निष्कर्ष मत रटाइए, विधि सिखाइए — यही NCERT की आत्मा है

+

NCERT से आगे · ज्ञान-विस्तार (वेब-सत्यापित) ; ताज़ा घटनाक्रम — ये तथ्य पाठ्यपुस्तक से अतिरिक्त हैं

[अतिरिक्त — NCERT से बाहर] प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु

🔍 ज्ञान-विस्तार: संख्याएँ और नाम जो उत्तर चमकाते हैं

- **विशाल स्नानागार के माप:** ≈ 12 मी × 7 मी × 2.4 मी — विश्व का प्राचीनतम सार्वजनिक जल-कुंड
- **'मोहनजोदड़ो' का अर्थ:** सिंधी में "मृतकों का टीला (Mound of the Dead)"
- **मेहरगढ़ (बलूचिस्तान):** दक्षिण एशिया का प्राचीनतम कृषक गाँव (~7000 ई.पू.); कपास की प्राचीनतम खेती (~6000 ई.पू.) — NCERT के '7000 ई.पू. के कृषक समुदाय' का ठोस नाम
- **'कालीबंगन' का अर्थ:** "काली चूड़ियाँ"; प्रथम पहचान — इतालवी विद्वान **लुइजी पिओ तेस्सितोरी**
- **नर्तकी (Dancing Girl):** काँसे की, लुप्त-मोम विधि; राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली | **पुरोहित-राजा:** सेलखड़ी; पाकिस्तान में
- **यूनानी 'सिंडन' (कपास) ← 'सिंधु'** — कपास का आदि-घर सिंधु क्षेत्र

बोर्ड-उत्तर में NCERT-तथ्य मुख्य; ये विस्तार-तथ्य पूरक रूप में लिखवाएँ

[अतिरिक्त — समसामयिकी]

☛ ताज़ा घटनाक्रम (31 जुलाई 2026 तक) ध्यान

- **धौलावीरा — UNESCO विश्व धरोहर (2021):** भारत का पहला सूचीबद्ध हड़प्पाई नगर; तीन-स्तरीय नगर-योजना, पत्थर-निर्माण, 16 जलाशय
- **हड़प्पा-घोषणा शताब्दी (1924–2024):** मार्शल की घोषणा के 100 वर्ष
- **लोथल में 65 वर्ष बाद पुनः उत्खनन (2025–26):** ड्रोन-सर्वे व डिजिटल मैपिंग; सोने के सूक्ष्म कण, मुहरें, समुद्री अवशेष मिलने की रिपोर्ट
- **राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC), लोथल:** ≈400 एकड़ पर निर्माणाधीन — 5000-वर्षीय समुद्री विरासत का संग्रहालय-परिसर
- **राखीगढ़ी के नवीनतम निष्कर्ष:** बाज़ार-परिसर, धान्यकोठार, सड़क-जाल — 'अपने समय का महानगर'
- **पतन पर नया जलवायु-अध्ययन (2025):** बार-बार के दीर्घ सूखों से धीमी गिरावट — NCERT की 'जलवायु परिवर्तन' व्याख्या को नवीनतम समर्थन

स्रोत-सूची 07-Beyond-NCERT.md में — कक्षा में 'क्या आप जानते हैं?' कोने के रूप में प्रयोग करें

सारांश: एक नज़र में

- **क्या:** नियोजित शहर • कृषि-शिल्प-व्यापार • मानकीकरण (ईंट 4:2:1, बाट) • संभवतः एक राज्य • ग्रामीण अंत
- **कैसे:** भौतिक साक्ष्य → वर्गीकरण → संदर्भ → तुलना → वैज्ञानिक तकनीकें (DNA तक)
- **सीमाएँ:** अपठित लिपि • परिरक्षण-पूर्वाग्रह • व्याख्या-विवाद
- **बदलती व्याख्याएँ:** आक्रमण-मिथक → डेल्स का खंडन → राखीगढ़ी-DNA
- अभ्यास: NCERT प्रश्न 1–12 • प्रश्न-बैंक (05) • फ्लैश कार्ड्स (06)

"अतीत टुकड़ों में मिलता है — इतिहासकार उसे विधि से जोड़ता है"

मरुशाला की कहानी

दो शिक्षक, एक मरुशाला



भरत चौधरी

व्याख्याता

रा.उ.मा.वि. जेठन्तरी · ब्लॉक समदड़ी, जिला बालोतरा



वनिता कुमारी

व्याख्याता

रा.उ.मा.वि. रामसीन मूंगड़ा · ब्लॉक एवं जिला बालोतरा

फ़ोन के कैमरे से स्कैन कीजिए

यह स्लाइड शो ऑनलाइन

marushala.com/teach/slides/class-12/history/inten-manke-tatha-asthiyan

विद्यार्थियों के लिए रिवीजन नोट्स

marushala.com/notes/class-12/history/revision-notes/inten-manke-tatha-asthiyan

MARUSHALA **marushala.com** निःशुल्क · बिना लॉगिन · हिन्दी और अंग्रेज़ी